

10 Class social Science History Notes in hindi chapter 2 Nationalism in India अध्याय - 2 भारत में राष्ट्रवाद

अध्याय - 2

भारत में राष्ट्रवाद

प्रथम विश्व युद्ध के प्रभाव :-

युद्ध के कारण रक्षा संबंधी खर्चों में बढ़ोतरी हुई थी। इसे पूरा करने के लिए कर्जें लिये गए और टैक्स बढ़ाए गए। अतिरिक्त राजस्व जुटाने के लिए कस्टम ड्यूटी और इनकम टैक्स को बढ़ाना पड़ा। युद्ध के वर्षों में चीजों की कीमतें बढ़ गईं। 1913 से 1918 के बीच दाम दोगुने हो गए। दाम बढ़ने से आम आदमी को अत्यधिक परेशानी हुई। ग्रामीण इलाकों से लोगों को जबरन सेना में भर्ती किए जाने से भी लोगों में बहुत गुस्सा था।

भारत के कई भागों में उपज खराब होने के कारण भोजन की कमी हो गई। इंग्लैंड की महामारी ने समस्या को और गंभीर कर दिया। 1921 की जनगणना के अनुसार, अकाल और महामारी के कारण 120 लाख से 130 लाख तक लोग मारे गए

प्रथम विश्व युद्ध द्वारा भारत में निर्मित नई आर्थिक स्थिति :-

1. भारत में मैनचेस्टर आयात में गिरावट आई क्योंकि ब्रिटिश मिलें युद्ध उत्पादन के साथ व्यस्त थीं ताकि भारतीय मिलों को विशाल घरेलू बाजार के लिए आपूर्ति के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके।

2. जैसे-जैसे युद्ध लंबा होता गया, भारतीय कारखानों को युद्ध की जरूरतों की आपूर्ति करने के लिए बुलाया गया। परिणामस्वरूप नए कारखाने स्थापित किए गए, नए श्रमिकों को नियुक्त किया गया और सभी को लंबे समय तक काम करने के लिए बनाया गया।

3. युद्ध के बाद ब्रिटेन से सूती कपड़े का उत्पादन ढह गया और नाटकीय ढंग से नियति में गिरावट आई, क्योंकि यह अमेरिका, जर्मनी, जापान के साथ आधुनिकीकरण और प्रतिस्पर्धा करने में असमर्थ था। इसलिए भारत जैसे उपनिवेशों के भीतर, स्थानीय उद्योगपतियों ने धीरे-धीरे अपनी स्थिति को घरेलू बाजार पर कब्जा कर लिया।

सत्याग्रह का अर्थ :-

महात्मा गांधी ने सत्याग्रह के रूप में जनांदोलन का एक नायाब तरीका अपनाया। यह तरीका इस सिद्धांत पर आधारित था कि यदि कोई सही मकसद के लिए लड़ रहा हो तो उसे अपने ऊपर अत्याचार करने वाले से लड़ने के लिए ताकत की जरूरत नहीं होती है। गांधीजी का विश्वास था कि एक सत्याग्रही अहिंसा के द्वारा ही अपनी लड़ाई जीत सकता है।

महात्मा गांधी और सत्याग्रह का विचार :-

महात्मा गांधी 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे थे। गांधीजी की जन आंदोलन की उपन्यास पद्धति को ' सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। सत्याग्रह ने सत्य पर बल दिया। गांधीजी का मानना था कि यदि कारण सत्य है, यदि संघर्ष अन्याय के विरुद्ध है, तो अत्याचारी से लड़ने के लिए शारीरिक बल आवश्यक नहीं था। अहिंसा के माध्यम से एक सत्याग्रही लड़ाई जीत सकता है। उत्पीड़कों सहित लोगों को सच्चाई देखने के लिए राजी होना पड़ा। सत्य अंततः जीत के लिए बाध्य था।

भारत में सबसे पहले 1916 में चंपारण में वृक्षारोपण श्रमिकों को दमनकारी वृक्षारोपण प्रणाली के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया गया था। 1917 में किसानों को समर्थन देने के लिए खेड़ा में सत्याग्रह। 1918 में अहमदाबाद में सत्याग्रह: सूती मिल मजदूरों के बीच।

• हिंद स्वराज • :-

महात्मा गांधी द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक, जिसमें भारत में ब्रिटिश शासन के असहयोग पर जोर दिया गया था।

रॉलैट ऐक्ट (1919) :-

इंपीरियल लेगिस्लेटिव काउंसिल द्वारा 1919 में रॉलैट ऐक्ट को पारित किया गया था। भारतीय सदस्यों ने इसका समर्थन नहीं किया था, लेकिन फिर भी यह पारित हो गया था। इस ऐक्ट ने सरकार को राजनैतिक गतिविधियों को कुचलने के लिए असीम शक्ति प्रदान किये थे। इसके तहत बिना ट्रायल के ही राजनैतिक कैदियों को दो साल तक बंदी बनाया जा सकता था।

6 अप्रैल 1919, को रॉलैट ऐक्ट के विरोध में गांधीजी ने राष्ट्रव्यापी आंदोलन की शुरुआत की। हड़ताल के आह्वान को भारी समर्थन प्राप्त हुआ। अलग - अलग शहरों में लोग इसके समर्थन में निकल पड़े, दुकानें बंद हो गईं और रेल कारखानों के मजदूर हड़ताल पर चले गये। अंग्रेजी हुकूमत ने राष्ट्रवादियों पर कठोर कदम उठाने का निर्णय लिया। कई स्थानीय नेताओं को बंदी बना लिया गया। महात्मा गांधी को दिल्ली में प्रवेश करने से रोका गया।

जलियांवाला बाग की घटना :-

10 अप्रैल 1919 को अमृतसर में पुलिस ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाई। इसके कारण लोगों ने जगह - जगह पर सरकारी संस्थानों पर आक्रमण किया। अमृतसर में मार्शल लॉ लागू हो गया और इसकी

कमान जेनरल डायर के हाथों में सौंप दी गई ।

जलियांवाला बाग का दुखद नरसंहार 13 अप्रैल को उस दिन हुआ जिस दिन पंजाब में बैसाखी मनाई जा रही थी । ग्रामीणों का एक जत्था जलियांवाला बाग में लगे एक मेले में शरीक होने आया था । यह बाग चारों तरफ से बंद था और निकलने के रास्ते संकीर्ण थे । जेनरल डायर ने निकलने के रास्ते बंद करवा दिये और भीड़ पर गोली चलवा दी । इस दुर्घटना में सैकड़ों लोग मारे गए । सरकार का रवैया बड़ा ही क्रूर था । इससे चारों तरफ हिंसा फैल गई । महात्मा गांधी ने आंदोलन को वापस ले लिया क्योंकि वे हिंसा नहीं चाहते थे ।

आंदोलन के विस्तार की आवश्यकता :-

रॉलैट सत्याग्रह मुख्यतया शहरों तक ही सीमित था । महात्मा गांधी को लगा कि भारत में आंदोलन का विस्तार होना चाहिए । उनका मानना था कि ऐसा तभी हो सकता है जब हिंदू और मुसलमान एक मंच पर आ जाएँ ।

खिलाफत आंदोलन :-

खिलाफत के मुद्दे ने गाँधीजी को एक अवसर दिया जिससे हिंदू और मुसलमानों को एक मंच पर लाया जा सकता था । प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की की कराड़ी हार हुई थी । ऑटोमन के शासक पर एक कड़े संधि समझौते की अफवाह फैली हुई थी । ऑटोमन का शासक इस्लामी संप्रदाय का खलीफा भी हुआ करता था । खलीफा की तरफदारी के लिए बंबई में मार्च 1919 में एक खिलाफत कमेटी बनाई गई ।

मुहम्मद अली और शौकत अली नामक दो भाई इस कमेटी के नेता थे । वे भी यह चाहते थे कि महात्मा गाँधी इस मुद्दे पर जनांदोलन करें । 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में खिलाफत के समर्थन में और स्वराज के लिए एक अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत करने का प्रस्ताव पारित हुआ ।

असहयोग आंदोलन :-

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक स्वराज (1909) में महात्मा गाँधी ने लिखा कि भारत में अंग्रेजी राज इसलिए स्थापित हो पाया क्योंकि भारतीयों ने उनके साथ सहयोग किया और उसी सहयोग के कारण अंग्रेज हुकूमत करते रहे । यदि भारतीय सहयोग करना बंद कर दें , तो अंग्रेजी राज एक साल के अंदर चरमरा जायेगी और स्वराज आ जायेगा । गाँधीजी को विश्वास था कि यदि भारतीय लोग सहयोग करना बंद करने लगे , तो अंग्रेजों के पास भारत को छोड़कर चले जाने के अलावा और कोई चारा नहीं रहेगा ।

असहयोग आंदोलन के कुछ प्रस्ताव :-

अंग्रेजी सरकार द्वारा प्रदान की गई उपाधियों को वापस करना ।

सिविल सर्विस , सेना , पुलिस , कोर्ट , लेजिस्लेटिव काउंसिल और स्कूलों का बहिष्कार ।

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार ।

यदि सरकार अपनी दमनकारी नीतियों से बाज न आये , तो संपूर्ण अवज्ञा आंदोलन शुरू करना ।

आंदोलन के विभिन्न स्वरूप :-

असहयोग - खिलाफत आंदोलन की शुरुआत जनवरी 1921 में हुई थी । इस आंदोलन में समाज के विभिन्न वर्गों ने शिरकत की थी और हर वर्ग की अपनी-अपनी महत्वाकांक्षाएँ थीं । सबने स्वराज के आह्वान का सम्मान किया था , लेकिन विभिन्न लोगों के लिए इसके विभिन्न अर्थ थे ।

भारत की अर्थव्यवस्था पर असहयोग आंदोलन के प्रभाव :-

विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया , शराब की दुकानों को चुना गया और विदेशी कपड़ा जला दिया गया ।

1921 - 1922 के बीच विदेशी कपड़े का आयात आधा हो गया । इसका मूल्य 102 करोड़ रुपये से घटकर 57 करोड़ रुपये रह गया । कई व्यापारियों और व्यापारियों ने विदेशी वस्तुओं या वित्त विदेशी व्यापार में व्यापार करने से इनकार कर दिया ।

लोगों ने आयातित कपड़े त्यागने और भारतीय कपड़े पहनने शुरू कर दिए । भारतीय कपड़ा मिलों और हाथ करघे का उत्पादन बढ़ा । खादी का उपयोग लोकप्रिय हुआ ।

ग्रामीण इलाकों में असहयोग आंदोलन :-

अवध में , बाबा रामचंद्र की अगुवाई में किसानों का आंदोलन उन तालुकदारों और जमींदारों के खिलाफ था , जिन्होंने किसानों से अत्यंत उच्च किराए और विभिन्न प्रकार के अन्य उपायों की मांग की । किसानों को बिना किसी भुगतान (भिखारी) के जमींदारों के खेतों में काम करने के लिए मजबूर किया गया था । किसानों के पास कार्यकाल की कोई सुरक्षा नहीं थी , इसलिए उन्हें नियमित रूप से बेदखल किया जाता था

ताकि वे पट्टे पर दी गई भूमि पर कोई अधिकार प्राप्त न कर सकें । किसानों की मांगें थीं - राजस्व में कमी , भिखारी का उन्मूलन और दमनकारी जमींदारों का सामाजिक बहिष्कार ।

आंध्र प्रदेश के गुडेम हिल्स में 1920 के दशक की शुरुआत में औपनिवेशिक सरकार द्वारा वन क्षेत्रों को बंद करने के खिलाफ एक उग्रवादी गुरिल्ला आंदोलन फैला था , जिससे लोगों को अपने मवेशियों को चराने के लिए जंगलों में प्रवेश करने से रोका जा सके , या ईंधन की लकड़ी और फल एकत्र किए जा सके । उन्हें लगा कि उनके पारंपरिक अधिकारों को नकारा जा रहा है ।

असम में बागान श्रमिकों के लिए , स्वतंत्रता का अर्थ था कि वे उस सीमित स्थान से स्वतंत्र रूप से अंदर और बाहर घूमने का अधिकार जिसमें वे संलग्न थे । इसका मतलब उस गाँव के साथ एक कड़ी को बनाए रखना था जिससे वे आए थे । 1859 के अंतर्देशीय उत्प्रवास अधिनियम के तहत , बागान श्रमिकों को अनुमति के बिना चाय बागानों को छोड़ने की अनुमति नहीं थी । वास्तव में अनुमति शायद ही दी गई थी । जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना , तो हजारों श्रमिकों ने अधिकारियों को ललकारा और अपने घरों के लिए रवाना हो गए ।

शहरों में असहयोग आंदोलन का धीमा पड़ना :-

चक्की के कपड़े की तुलना में खादी का कपड़ा अधिक महंगा था और गरीब लोग इसे खरीद नहीं सकते थे । परिणामस्वरूप वे बहुत लंबे समय तक मिल के कपड़े का बहिष्कार नहीं कर सकते थे ।

वैकल्पिक भारतीय संस्थान वहां नहीं थे जिनका इस्तेमाल अंग्रेजों की जगह किया जा सकता था । ये ऊपर आने के लिए धीमी थीं ।

इसलिए छात्रों और शिक्षकों ने सरकारी स्कूलों में वापस आना शुरू कर दिया और वकील सरकारी अदालतों में काम से जुड़ गए ।

चौरी चौरा की घटना :-

फरवरी 1922 में , गांधीजी ने नो टैक्स आंदोलन शुरू करने का फैसला किया । बिना किसी उकसावे के प्रदर्शन में भाग ले रहे लोगों पर पुलिस ने गोलियां चला दीं । लोग अपने गुस्से में हिंसक हो गए और पुलिस स्टेशन पर हमला कर दिया और उसमें आग लगा दी । यह घटना उत्तर प्रदेश के चौरी चौरा में हुई थी ।

जब खबर गांधीजी तक पहुंची , तो उन्होंने असहयोग आंदोलन को बंद करने का फैसला किया क्योंकि उन्हें लगा कि यह हिंसक हो रहा है और सत्याग्रहियों को बड़े पैमाने पर संघर्ष के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया है

। स्वराज पार्टी की स्थापना सीआर दास और मोती लाई नेहरू ने काउंसिल पॉलिटिक्स में वापसी के लिए की थी। साइमन कमीशन 1928 और बहिष्कार। 1929 में लाहौर कांग्रेस अधिवेशन और प्युमा स्वराज की माँग। दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत।

सविनय अवज्ञा आंदोलन :-

1921 के अंत आते आते, कई जगहों पर आंदोलन हिंसक होने लगा था। फरवरी 1922 में गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का निर्णय ले लिया। कांग्रेस के कुछ नेता भी जनांदोलन से थक से गए थे और राज्यों के काउंसिल के चुनावों में हिस्सा लेना चाहते थे। राज्य के काउंसिलों का गठन गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ऐक्ट 1919 के तहत हुआ था। कई नेताओं का मानना था सिस्टम का भाग बनकर अंग्रेजी नीतियों विरोध करना भी महत्वपूर्ण था।

मोतीलाल नेहरू और सी आर दास जैसे पुराने नेताओं ने कांग्रेस के भीतर ही स्वराज पार्टी बनाई और काउंसिल की राजनीति में भागीदारी की वकालत करने लगे।

सुभाष चंद्र बोस और जवाहरलाल नेहरू जैसे नए नेता जनांदोलन और पूर्ण स्वराज के पक्ष में थे।

यह कांग्रेस में अंतर्द्वंद और अंतर्विरोध का एक काल था। इसी काल में ग्रेट डिप्रेशन का असर भी भारत में महसूस किया जाने लगा। 1926 से खाद्यान्नों की कीमत गिरने लगी। 1930 में कीमतेँ मुँह के बल गिरी। ग्रेट डिप्रेशन के प्रभाव के कारण पूरे देश में तबाही का माहौल था।

सविनय अवज्ञा आंदोलन की विशेषताएं :-

लोगों को अब न केवल ब्रिटिशों के साथ सहयोग से इनकार करने के लिए कहा गया, बल्कि औपनिवेशिक कानूनों को तोड़ने के लिए भी कहा गया।

विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया और लोगों से शराब की दुकानों को लेने के लिए कहा गया।

किसानों को राजस्व और चौकीदारी करों का भुगतान नहीं करने के लिए कहा गया था।

छात्रों, वकीलों और गांव के अधिकारियों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों, कॉलेजों, अदालतों और कार्यालयों में उपस्थित नहीं होने के लिए कहा गया।

साइमन कमीशन :-

अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में एक वैधानिक कमीशन गठित किया। इस कमीशन को भारत में संवैधानिक सिस्टम के कार्य का मूल्यांकन करने और जरूरी बदलाव के सुझाव देने के लिए बनाया गया था। लेकिन चूंकि इस कमीशन में केवल अंग्रेज सदस्य ही थे, इसलिए भारतीय नेताओं ने इसका विरोध किया।

साइमन कमीशन 1928 में भारत आया। 'साइमन वापस जाओ' के नारों के साथ इसका स्वागत हुआ। विद्रोह में सभी पार्टियाँ शामिल हुईं। अक्टूबर 1929 में लॉर्ड इरविन ने 'डॉमिनियन स्टेटस' की ओर इशारा किया था लेकिन इसकी समय सीमा नहीं बताई गई। उसने भविष्य के संविधान पर चर्चा करने के लिए एक गोलमेज सम्मेलन का न्योता भी दिया।

उग्र नेता कांग्रेस में प्रभावशाली होते जा रहे थे। वे अंग्रेजों के प्रस्ताव से संतुष्ट नहीं थे। नरम दल के नेता डॉमिनियन स्टेटस के पक्ष में थे, लेकिन कांग्रेस में उनका प्रभाव कम होता जा रहा था।

दिसंबर 1929 में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन हुआ था। इसमें पूर्ण स्वराज के संकल्प को पारित किया गया। 26 जनवरी 1930 को स्वाधीनता दिवस घोषित किया गया और लोगों से आह्वान किया गया कि वे संपूर्ण स्वाधीनता के लिए संघर्ष करें। लेकिन इस कार्यक्रम को जनता का दबा दबा समर्थन ही प्राप्त हुआ।

फिर यह महात्मा गाँधी पर छोड़ दिया गया कि लोगों के दैनिक जीवन के ठोस मुद्दों के साथ स्वाधीनता जैसे अमूर्त मुद्दे को कैसे जोड़ा जाए।

दांडी मार्च :-

महात्मा गाँधी का विश्वास था कि पूरे देश को एक करने में नमक एक शक्तिशाली हथियार बन सकता था। अधिकांश लोगों ने; जिनमें अंग्रेज भी शामिल थे; इस सोच को हास्यास्पद करार दिया।

31 जनवरी, 1930 को महात्मा गांधी ने वाइसराय इरविन को एक पत्र भेजा जिसमें ग्यारह माँगें थीं, जिनमें से एक नमक कर को समाप्त करने की माँग थी। नमक अमीर और गरीब समान रूप से उपभोग किए जाने वाले सबसे आवश्यक खाद्य पदार्थों में से एक था और इस पर एक कर ब्रिटिश सरकार द्वारा लोगों पर अत्याचार माना जाता था।

महात्मा गांधी का पत्र एक अल्टीमेटम था और अगर 11 मार्च तक उनकी माँग पूरी नहीं हुई, तो उन्होंने सविनय अवज्ञा अभियान शुरू करने की

धमकी दी थी। तो, महात्मा गांधी ने अपने विश्वसनीय स्वयंसेवकों में से 78 के साथ अपने प्रसिद्ध नमक मार्च की शुरुआत की।

दांडी मार्च या नमक आंदोलन को गाँधीजी ने 12 मार्च 1930 को शुरू किया। उन्होंने 24 दिनों तक चलकर साबरमती से दांडी तक की 240 मील की दूरी तय की। महात्मा गांधी को सुनने के लिए हजारों लोग जहाँ भी रुके, और उसने उन्हें बताया कि स्वराज से उनका क्या तात्पर्य है और उन्होंने अंग्रेजों से पूरी तरह से शांति के लिए आग्रह किया।

6 अप्रैल को, वह दांडी पहुंचे और औपचारिक रूप से कानून का उल्लंघन किया, समुद्र के पानी को उबालकर नमक का निर्माण किया। इसने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत को चिह्नित किया।

आंदोलन में किसने भाग लिया ?

देश के विभिन्न हिस्सों में सविनय अवज्ञा आंदोलन लागू हो गया। गांधीजी ने साबरमती आश्रम से दांडी तक अपने अनुयायियों के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया। ग्रामीण इलाकों में, गुजरात के अमीर पाटीदार और उत्तर प्रदेश के जाट आंदोलन में सक्रिय थे। चूंकि अमीर समुदाय व्यापार अवसाद और गिरती कीमतों से बहुत प्रभावित थे, वे सविनय अवज्ञा आंदोलन के उत्साही समर्थक बन गए। व्यापारियों और उद्योगपतियों ने आयातित वस्तुओं को खरीदने और बेचने से इनकार करके वित्तीय सहायता देकर आंदोलन का समर्थन किया। नागपुर क्षेत्र के औद्योगिक श्रमिक वर्ग ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी भाग लिया। रेलवे कर्मचारियों, डॉक वर्कर्स, छोटा नागपुर के खनिज आदि ने विरोध रैली और बहिष्कार अभियानों में भाग लिया।

अछूतों द्वारा आंदोलन की सीमा कम भागीदारी - पृथक मतदाता के लिए अम्बेडकर और 1932 की पूना संधि, कुछ मुस्लिम राजनीतिक संगठन द्वारा ल्यूक गर्म प्रतिक्रिया।

1932 की पूना संधि के प्रावधान :-

डॉ। अंबेडकर और गांधीजी के बीच हस्ताक्षर। इसने केंद्रीय प्रांतीय परिषदों में उदास वर्गों को आरक्षित सीटें दी, लेकिन उन्हें आम मतदाताओं द्वारा वोट दिया जाना था।

सामूहिकता की भावना :-

यद्यपि राष्ट्रवाद एकजुट संघर्ष के अनुभव से फैलता है , लेकिन विभिन्न सांस्कृतिक प्रक्रियाओं ने भारतीयों की कल्पना को पकड़ लिया और सामूहिकता की भावना को बढ़ावा दिया :

1 . आकृतियों या चित्रों का उपयोग :- भारत की पहचान भारत माता की छवि के साथ नेत्रहीन रूप से जुड़ी हुई थी । माता की आकृति के प्रति समर्पण को एक के राष्ट्रवाद के प्रमाण के रूप में देखा गया ।

2 भारतीय लोकगीत :- राष्ट्रवादियों ने लोकगीतों और कहानियों की रिकॉर्डिंग और उपयोग करना शुरू कर दिया , जो उन्हें विश्वास था , पारंपरिक संस्कृति की एक सच्ची तस्वीर दी गई थी जो बाहरी ताकतों द्वारा दूषित और क्षतिग्रस्त हो गई थी । इसलिए इनका संरक्षण किसी की राष्ट्रीय पहचान की खोज और किसी के अतीत में मूल्य की भावना को बहाल करने का एक तरीका बन गया ।

3 . झंडे के रूप में चिह्न और प्रतीकों का उपयोग :- तिरंगे झंडे को उतारना और मार्च के दौरान इसे धारण करना अवहेलना का प्रतीक बन गया और सामूहिकता की भावना को बढ़ावा दिया ।

4 . इतिहास की पुनर्व्यख्या :- भारतीयों ने कला , विज्ञान , गणित , धर्म और संस्कृति आदि के क्षेत्र में प्राचीन काल के गौरवशाली विकास को फिर से देखने के लिए अतीत की ओर देखना शुरू किया । इस गौरवशाली समय के बाद पतन का इतिहास सामने आया , जब भारत ने उपनिवेश बना लिया , जैसा कि उपनिवेशवादियों द्वारा भारतीय इतिहास को बुरी तरह से लिखा गया था ।
